

36737 - यदि एम मोजे के ऊपर दूसरा मोजा या एक जुर्बा पर दूसरा जुर्बा पहन लें तो दोनों में से किस पर मसह किया जायेगा ?

प्रश्न

क्या दो जुर्बाओं (मोज़ों) पर एक दूसरे के ऊपर मसह करना जाइज़ है ? और यदि ऐसा करना जाइज़ है और उसने मसह कर लिया किंतु उसने पहला मोजा निकाल दिया फिर उसका वुज़ू टूट गया तो क्या उसके लिए अब मसह करना जाइज़ है या नहीं ?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह के लिए योग्य है।

मनुष्य के लिए एक मोजे के ऊपर दूसरा मोजा और एक जुर्बा के ऊपर दूसरा जुर्बा पहनना जाइज़ है, यदि उसने ऊपर वाले मोजे पर मसह किया - जिन हालतों में उन पर मसह करने की अनुमति है जैसाकि आगे आ रहा है - फिर उसे निकाल दिया, और उसका वुज़ू टूट गया, तो कुछ विद्वानों के कथन के अनुसार उसके लिए नीचे वाले मोजे पर मसह करना जाइज़ है।

शैख इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह ने मोजे के ऊपर मोजा या जुर्बा के ऊपर जुर्बा पहनने की हालतों का खुलासा किया है जैसाकि निम्नलिखित है :

1- यदि आदमी ने मोजा या जुर्बा पहना, फिर उसका वुज़ू टूट गया, फिर उसने वुज़ू करने से पहले उसके ऊपर दूसरा मोजा पहन लिया, तो पहले मोजे का हुक्म लागू होगा। अर्थात् यदि वह इसके बाद मसह करने का इरादा करे तो पहले मोजे पर मसह करेगा, उसके लिए ऊपर वाले मोजे पर मसह करना जाइज़ नहीं है।

2- यदि आदमी ने कोई मोजा या जुर्बा पहना, फिर उसका वुज़ू टूट गया, और उसने उस मोजे पर मसह किया, फिर उसके ऊपर दूसरा मोजा पहन लिया, तो सही कथन के अनुसार उसके लिए दूसरे मोजे पर मसह करना जाइज़ है। "अल-फुरूअ" के लेखक का कहना है : इमाम मालिक के अनुसार जाइज़ होने का कथन उचित है। (अंत) तथा नववी ने कहा : यही बात सब से स्पष्ट और पसंदीदा है क्योंकि उसने उसे तहारत (वुज़ू) की हालत में पहना है। लोगों का यह कहना कि यह एक अपूर्ण पवित्रता है, अस्वीकारनीय है। (नववी की बात का अंत हुआ) और जब हमने इस कथन को स्वीकार कर लिया तो मसह करने की अवधि का आरंभ पहले मोजे पर मसह करने से होगा। तथा उसके लिए इस स्थिति में बिना किसी संदेह के पहले



मोज़े पर भी मसह करना जाइज़ है।

3- यदि आदमी ने एक मोज़े या जुराब पर दूसरा मोज़ा पहन लिया, और ऊपर वाले मोज़े पर मसह किया, फिर उसे उतार दिया, तो क्या वह शेष अवधि भर नीचे वाले मोज़े पर मसह कर सकता है ? मैं किसी भी विद्वान को नहीं जानता जिसने इसको स्पष्ट रूप से वर्णन किया है, किंतु नववी ने अबुल अब्बास बिन सुरैज से वर्णन किया है कि यदि आदमी मोज़े पर जुराब को पहन लेता है तो उसके तीन अर्थ हैं, उन्हीं में से एक यह है कि : वे दोनों एक मोज़े के समान होंगे, ऊपर वाला मोज़ा प्रत्यक्ष है और नीचे वाला मोज़ा परोक्ष है। मैं कहता हूँ : और इस आधार पर नीचे वाले मोज़े पर मसह करना जाइज़ है यहाँ तक कि ऊपर वाले मोज़े पर मसह करने की अवधि समाप्त हो जाये, जैसे कि यदि प्रत्यक्ष (ज़ाहिरी) मोज़े को खोल दिया जाये तो तो उसके बातिनी (अंदरूनी) हिस्से पर मसह किया जायेगा।

"फतावा अत्तहारा" (पृष्ठ : 192) से समाप्त हुआ।

जुरमूक : उस मोज़े को कहते हैं जो आम मोज़े के ऊपर पहना जाता है, विशेष रूप से ठंडे देशों। "कश्शाफुल किना" (1/130)

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मोज़े से अभिप्राय यह है कि जैसे कोई ऐसा मोज़ा हो जो दो परतों से बना हो, तो ऊपर वाले को प्रत्यक्ष और नीचे वाले को अप्रत्यक्ष कहा जाता है। "अश्श्रहुल मुम्ते" (1 / 211)